AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

डॉ. गीतांजलि बौहरे
सहायक प्राध्यापक
माधव शिक्षा महाविद्यलय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

डॉ. अंचला दीक्षित गौड़
नैदानिक मनोवैज्ञानिक
जिला चिकित्सालय
रतलाम, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

शिक्षा वह प्रकार है जो जीवन के समस्त अंधकार को दूर कर बालक में पवित्र संस्कारों, सृजनात्मक क्रियाओं, भावनाओं, निश्चित दृष्टिकोणों एवं भावी विचारों को जन्म देती है। इसके अतिरिक्त मानव समुदाय के सर्वांगीण विकास, राष्ट्रीय संस्कृति के संरक्षण तथा जातीय उत्थान के लिए शिक्षा नितान्त आवश्यक समझी गई है। शिक्षा के व्यापक प्रचार एवं प्रसार में शिक्षक का योगदान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इस शोध पत्र में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, शिक्षक, समायोजन, प्रशिक्षण.

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। जन्म से बालक पशुवत आचरण करता रहता है। उसके व्यवहार में सौदंर्य लाने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है, और सभ्यता के रथ को आगे बढाता है। जीवन की उच्चता, सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव है। बालक की वैयक्तिक प्रगति, उसका शारीरिक मानसिक और भावात्मक विकास तब तक भली प्रकार नही हो सकता जब तक वह शिक्षा ग्रहण न करें। समाज में सुख–समृद्वि लाने का कार्य शिक्षा ही करती है। दार्शनिक प्लटो के शब्दो में– शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतो के द्वारा विद्यार्थियों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।

डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ के शब्दों में, शिक्षण कोशल शिक्षक के हाथ में वह शस्त्र है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कक्षा शिक्षण को प्रभावशाली तथा सक्रिय बनाता है एवं कक्षा की अन्तः क्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है।

राष्ट्र का भविष्य कक्षाओं में निर्मित हो रहा है। देश के भविष्य का स्वरूप क्या हो राष्ट्र किस और प्रगति करें ये सारी शक्ति शिक्षक में निहित है अर्थात् शिक्षक के हाथ में देश के भविष्य की बागडोर है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं का समाधान शिक्षकों से कराता है। कुशल शिक्षक ही श्रेष्ठ शिक्षा दे सकता है, किन्तु हमारे शिक्षक जो अप्रशिक्षित है अथवा वर्षो पूर्व प्रशिक्षण लिए हुए होते है वे उसी प्रशिक्षण के ज्ञान के आधार पर बच्चों का शिक्षण कार्य करते है। आधुनिक परिवेश में जहां ज्ञान का विकास तीव्रगति के साथ–साथ प्रतिदिन परिवर्तित होता रहता है। हमें इस बात की आवष्यकता है कि हम शिक्षकों कों नये विषयों का तथा विषयों के परिवर्तित ज्ञान और उसकी नई विधियों

के विषय में ज्ञान करायें। यह नवीन या परिवर्तित ज्ञान हम शिक्षकों को प्रशिक्षण के माध्यम से ही दे सकते है।

एक प्रशिक्षित अध्यापक बालक के विकास को सरलता व सुगमता से सम्भव बना सकता है जबकि एक अप्रशिक्षित अध्यापक मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह करने में स्वयं को असमर्थ पाता है। प्रशिक्षित अध्यापक कक्षा शिक्षण को रोचक, जीवन्त व प्रभावशाली बनाने में समर्थ होता है। वह मनो–वैज्ञानिक शिक्षण विधियों तथा शैक्षिण तकनीकी का प्रयोग करके अपने छात्रों को सहजता, सरलता व सुगमता से स्थायी ज्ञान प्रदान कर सकता है। इसके विपरीत अप्रशिक्षित अध्यापक उपरोक्तानुसार शिक्षण कराने में दक्ष हो यह आवश्यक नहीं है।

समस्या कथन

"प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलानात्मक अध्ययन।"

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलानात्मक अध्ययन।
2. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शैक्षणिक योग्यता का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ है:

$\mathbf{H_{01}}$ प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$\mathbf{H_{02}}$ प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के शैक्षणिक योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु ग्वालियर जिले के विद्यालयों में सेवारत शिक्षकों को लिया गया है।
2. समस्या का अध्ययन 25 प्रशिक्षित एवं 25 अप्रशिक्षित शिक्षको को चुनकर किया गया है।

न्यार्दश

प्रस्तुत अध्ययन में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों का न्यार्दश के रूप में चयन किया गया है।

न्यार्दश का आकार

तालिका 1

प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या	योग
25	25	50

उपकरण

अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

साक्षात्कार

हमने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की विषय वस्तु एवं शिक्षण की कठिनाइयों के अध्ययन हेतु साक्षात्कार द्वारा विषय शिक्षकों के महत्वपूर्ण विचारों का संकलन किया है।

प्रदत्त संकलन विधि

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो प्रकार के समंको का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक संमक में हमने संस्था प्रमुख एवं शिक्षक से प्राप्त कियें तथा शोधकर्ता ने अपनों उपस्थिती दर्ज कराई। संकलित प्रदत्तों को एक निश्चित व्यवस्था में सारणीबद्व किया तथा उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निष्कर्ष

अध्ययन हेतु प्राप्त प्रदतों का मध्यमान, मानक विचलन परीक्षण के द्वारा विश्लेषण किया गया।

अध्ययन के परिणाम

माध्यमिक विद्यालयों के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षिकों के समायोजन का अध्ययन।

प्रस्तुत अध्ययन का पहला उद्देश्य हैः

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन जिसका परिणाम तालिका 2 में दिया गया है और साथ माध्यमिक विद्यालयों के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षिकों की शैक्षणिक योग्यता मौखिक परीक्षण के माध्यम से प्रयोग किया गया जिसका विवरण तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 2: प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको के समायोजन का तुलानात्मक अध्ययन

क्रमांक	क्षेत्र	शिक्षकों की संख्या	अध्यमान	मानक विचालन
1.	प्रशिक्षित शिक्षक	25	5	2.29
2.	अप्रशिक्षित शिक्षक	25	3	2.81

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका 3: प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षको के समायोजन का तुलनात्मन अध्ययन

क्रमांक	विकल्प	प्रशिक्षित शिक्षक		अप्रशिक्षित शिक्षक	
1.	हायर सेंकण्डरी	04	16 प्रतिशत	12	48 प्रतिशत
2.	केवल स्नातक	14	56 प्रतिशत	10	40 प्रतिशत
3.	स्नात्तकोत्तर	18	72 प्रतिशत	20	80 प्रतिशत

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

सार्थक स्तर

तालिका 2 और 3 से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की संस्खा 25 है, प्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान 5 है अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या 25 है, अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन का मध्यमान 3 है जो प्रशिक्षित शिक्षिकों से अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्यमान का लगभग 2 अंक का अन्तर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का मानक विचलन 2.29 है जबकि अप्रशिक्षित शिक्षकों का मानक विचलन 2.8 है जो कि लगभग प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में –0. 52 है।

ग्वालियर जिले के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में से प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन परिणाम बेहतर रहते है जो यह संकेत करता है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का प्रशिक्षित होना आवश्यक है जिससे छात्रों को प्रशिक्षित शिक्षकों का लाभ प्राप्त हो सके।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ग्वालियर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत केवल न्यूनतम योग्यता (हायर सेकेण्डरी) प्राप्त प्रशिक्षित शिक्षक 16 प्रतिशत है, जबकि अप्रशिक्षित शिक्षक 48 प्रतिशत है,जो कि प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना मे 3 गुना अधिक है। ग्वालियर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में 56 प्रतिशत शिक्षक स्नातक है एवं प्रशिक्षित है जबकि अप्रशिक्षित शिक्षक 40 प्रतिशत है, जो कि प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में 16 प्रतिशत कम है। ग्वालियर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रशिक्षित स्नातकोत्तर शिक्षक 72 प्रतिशत है, जबकि अप्रशिक्षित स्नातकोक्तर शिक्षक 80 प्रतिशत है जो प्रतिशत स्नातकाक्तर शिक्षकों की तुलना में 8 फीसदी अधिक है।

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों में शैक्षणिक समायोजन हासिल करने में प्रशिक्षित शिक्षक योग्यता के दृष्टिकोण से बेहतर परिणाम हासिल कर सकते है।

निष्कर्ष

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन में सार्थक अंतर है। प्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में उच्च है। प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता अप्रशिक्षित शिक्षकों से प्रशिक्षित शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता के आधार पर उनमें समायोजन करने की क्षमता अधिक है। प्रशिक्षित शिक्षक विभिन्न शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं। इसके बावजूद अप्रशिक्षित शिक्षकों के अनुभव और स्वाभाविक शिक्षण कौशल को भी नकारा नहीं जा सकता। शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए यह महत्वपूर्ण है कि सभी शिक्षकों को निरंतर पेशेवर विकास के अवसर प्रदान किए जाएं ताकि वे अपनी शिक्षण विधियों और कक्षा प्रबंधन कौशल को लगातार सुधार सकें। इस प्रकारए प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित दोनों प्रकार के शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों के समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, अप्रशिक्षित शिक्षक भी अपने अनुभव और स्वाभाविक कौशल के माध्यम से योगदान दे सकते हैं।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षकों के समायोजन और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए निरंतर प्रशिक्षण और पेशेवर विकास के अवसर महत्वपूर्ण हैं। एक सहयोगी और समर्थक शैक्षणिक वातावरण बनाने से सभी शिक्षकों की क्षमता को अधिकतम किया जा सकता है, जिससे छात्रों की सीखने की यात्रा और भी प्रभावी और समृद्ध हो सकती है।

सुझाव

1. शिक्षकों को छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान रखकर शिक्षण कराना चाहिए।
2. शिक्षकों द्वारा शिक्षण को छात्रों के व्यवहारिक जीवन से जोड़कर समायोजन का ज्ञान देना चाहिए।
3. शासन द्वारा अप्रशिक्षित शिक्षको को यथाशीघ्र प्रशिक्षित कराया जा सकेगा कि वह समाज व विद्यालयों में उत्तम समायोजन कर सकें।

संदर्भ सूची

1. कपूर, प्रमिला (1976) *कामकाजी भारतीय नारी,* राजपाल एंड संस, दिल्ली, पृ. 373।
2. लॉके, हार्वे जे, एण्ड मेकेप्रेंग (1949) मेरिड मेरिटल एडजस्टमेंट एण्ड द एम्पलायड वाइफ, *अमेरिकन जनरल ऑफ़ सोशियोलॉजी,* वोल्यूम 54, नंबर 6, मई 1949।
3. लवानिया, एम. एम. एवं जैन, शशि के (2002) *भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र,* रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर पृ. 418।
4. मुखर्जी, रवींद्रनाथ (1983) *सामाजिक शोध व सांख्यिकी,* विवेक प्रकाश, दिल्ली।
5. सलूजा, शीला एवं सलूजा चुन्नीलाल (2001) *कामकाजी महिलाएः समस्या एवं समाधान,* पुस्तक महल, दिल्ली, प्रथम संस्करण।
6. सिंह, मंजू (1981) *कार्यशील महिलाएं एवं सामाजिक परिवर्तन* प्रिन्टवैल, जयपुर।

——==00==——